2 अप्रैल 2010, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

भगवान महावीर का जीवन अहिंसा के आधार पर मानव जीवन के चरम विकास की कहानी है।

ह्र ती. महावीर स. तीर्थ, पृष्ठ-3

वर्ष : 33, अंक : 1 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अप्रैल (प्रथम), 2010 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

डॉ. भारिल्ल का तूफानी दौरा : जगह-जगह हीरक जयन्ती समारोह

डॉ.भारिल्ल द्वारा 75 वर्षीय जीवन काल में किये गये तत्त्वप्रचार-प्रसार को ध्यान में रखते हुये छोटे-छोटे गाँवों से लेकर बडे-बडे शहरों तक जगह-जगह उनकी हीरक जयन्ती मनाने की होड लगी हुई है। दिनांक 9 से 18 मार्च तक डॉ. भारिल्ल का निसई, सागर, सिलवानी, केसली, गौरझामर, बण्डा, दलपतपुर, खडैरी एवं दमोह का तूफानी दौरा रहा। हीरक जयन्ती तो एक बहाना है, मूल भावना तो तत्त्वप्रचार-प्रसार की ही है। इस दौरान डॉ. भारिल्ल के निसई में 5 प्रवचन, सागर में 4 प्रवचन, सिलवानी में 1 प्रवचन, गौरझामर में 1 प्रवचन, दलपतपुर में 1 प्रवचन, खडैरी में 2 प्रवचन, दमोह में 3 प्रवचन तथा बण्डा और केसली में 1-1 प्रवचन हुये। इसमें महत्वपूर्ण बात यह है कि अधिकांश प्रवचन सार्वजनिक स्थानों पर हुये, जिसमें बिना किसी भेदभाव के समाज के सभी वर्गों ने उत्साहपूर्वक धर्मलाभ लिया।

ज्ञातव्य है कि बण्डा एवं केसली में समयाभाव के कारण हीरक जयन्ती समारोह नहीं हो सका, वहाँ से प्रवचन करके डॉ. भारिल्ल आगे बढ गये तो बण्डावालों ने दलपतपुर पहुँचकर और केसलीवालों ने खडैरी पहुँचकर अभिनन्दन पत्र भेंट करके अपनी भावनायें व्यक्त की।

अन्य सभी स्थानों पर प्रवचन के पश्चात् हीरक जयन्ती समारोह आयोजित हुये, जिनमें सहस्राधिक लोगों की उपस्थिति में समाज की अनेकों विशिष्ट संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं शताधिक लोगों ने प्रशस्तियों, शॉल, माल्यार्पण आदि से डॉ. भारिल्ल का भावभीना अभिनन्दन किया।

● निसईजी (म.प्र.) में तीन दिवसीय कार्यक्रम ह्र

अतिशय क्षेत्र निसईजी में दिनाँक 9 से 11 मार्च तक अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के व्याख्यान एवं हीरक जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन डॉ. भारिल्ल द्वारा श्री तारणस्वामी विरचित ज्ञानसमुच्चयसार की गाथा 75 से 81 के आधार से शुद्धात्मा का स्वरूप, परिणामों की निर्मलता, कार्य-कारण संबंध, ध्यान का स्वरूप जैसे गूढ-गंभीर विषयों पर मार्मिक व्याख्यान हुये।

आपके अतिरिक्त पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा इन्दौर, ब्र. वसंतजी, ब्र. आत्मानंदजी व पं. अभिषेकजी मंगलायतन के प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनांक 11 मार्च को प्रवचनोपरान्त हीरक जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में श्रीमंत सेठ श्री डालचंदजी जैन सागर (पूर्व सांसद), सिंघई ज्ञानचंदजी बीना (महामंत्री-अखिल भारतीय तारण समाज), श्रीमंत सेठ श्री प्रेमचंदजी सागर (अध्यक्ष-निसईजी ट्रस्ट), श्री राजेन्द्रजी सुमन सिंगोड़ी (संपादक-संत श्री तारण ज्योति), श्री संतोषजी समैया (मेला अध्यक्ष), श्री रतनचंदजी नियम गंजबासौदा (तीर्थक्षेत्र मंत्री), श्री तारण-तरण संघ के त्यागी व्रती महानुभाव, श्री नीलेशकुमारजी सुहागपुर एवं पण्डित रतनचंदजी होशंगाबाद उपस्थित थे।

इस अवसर पर अ.भा.तारण समाज, तारण-तरण तीर्थक्षेत्र निसईजी ट्रस्ट, अ.भा.तारण-तरण जैन युवा परिषद एवं तारण-तरण विद्वत् परिषद ने डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया। साथ ही विदिशा, दहेगाँव, होशंगाबाद, खुरई, सिंगोड़ी आदि अनेक स्थानों से पधारे सैंकड़ों साधर्मीजनों ने शॉल, श्रीफल एवं सम्मान-पत्र प्रदानकर अभिनन्दन किया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. विद्यानंदजी जैन विदिशा ने किया।

● सागर में बृहत्स्तर पर आयोजन ह्र

सागर में दिनांक 12 से 14 मार्च तक तीन दिवसीय प्रवास के दौरान श्री शांतिनाथ जिनालय **मकरोनिया** में डॉ. भारिल्ल के **ज्ञान समुच्चयसार** पर, महावीर जिनालय **परकोटा** में समयसार के **15वें कलश** पर एवं **तारण-तरण चैत्यालय** में **ज्ञान समुच्चयसार** पर मार्मिक प्रवचन हुये।

दिनांक 14 मार्च को विजय टाकीज परिसर, मधुबन पैलेस में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का हीरक जयन्ती समारोह मुमुक्षु मण्डल, सकल दि. जैन समाज एवं तारण समाज सागर के तत्त्वावधान में विशालस्तर पर आयोजित किया गया। इससे पूर्व डॉ. भारिल्ल का **णमोकार महामंत्र** पर मार्मिक प्रवचन हुआ।

इस अवसर पर सभा की अध्यक्षता श्रीमंत सेठ श्री माणिकचंदजी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमंत सेठ श्री धर्मेन्द्रकुमारजी (खुरई) उपस्थित थे। अन्य अतिथियों में श्रीमती सुधा जैन (पूर्व विधायक), श्री प्रकाशचन्द्रजी (माणकचौक), श्री कृष्णचंदजी जैन (लाल दुकान), श्री पद्मचंदजी (मगरधा वाले), श्री नेमीचंदजी विनम्र, श्री गुलाबचंदजी सेठ (सुभाष ट्रांसपोर्ट), श्रीमंत सेठ अशोकजी जैन, इंजीनियर ए.के.जैन भोपाल एवं श्री राजकुमारजी जैन (कर्रापुर) मंचासीन थे। **(शेष पृष्ठ 4 पर ...)**

सम्पादकीय – 32

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

(गतांक से आगे...) ह्व पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा–४७

जिसप्रकार धन और ज्ञान पुरुष को धनी व ज्ञानी करते हैं। उसीप्रकार तत्त्वज्ञ पृथक्त्व तथा एकत्व को कहते हैं।

मूलगाथा इस प्रकार है ह्व

णाणं धणं च कुव्वदि धणिणं जह णाणिणं च दुविधेहिं।
भण्णंति तह पुधत्तं एयत्तं चावि तच्चण्हू ।।४७।।

(हरिगीत)

धन से धनी अरु ज्ञान से ज्ञानी द्विविध व्यपदेश है।
इस भाँति ही पृथकत्व अर एकत्व का व्यपदेश है।।४७।।

आचार्य कुन्दकुन्द मूल गाथा में कहते हैं कि ह्व जिसप्रकार धन व ज्ञान से पुरुष धनी व ज्ञानी कहे जाते हैं, ऐसा दो प्रकार से व्यपदेश है। उसी प्रकार तत्त्वज्ञ पृथकत्व तथा एकत्व को कहते हैं।

आचार्य अमृतचन्द्र उक्त गाथा की टीका में विस्तार से कहते हैं किह्व ये वस्तुत्व रूप से भेद व अभेद का उदाहरण है। जिसप्रकार भिन्न अस्तित्व से रचित, भिन्न संस्थान वाला, भिन्न संख्या वाला और भिन्न विषय में स्थित धनिक पुरुष को धनी ह्व ऐसा व्यपदेश पृथक् से करता है तथा जिसप्रकार अभिन्न अस्तित्व से रचित, अभिन्न संस्थान वाला, अभिन्न संख्या वाला और अभिन्न विषय में स्थित ज्ञानी ऐसा व्यपदेश एकत्व प्रकार से करता है। उसीप्रकार ज्ञानगुण युक्त आत्मा ज्ञानी कहलाता है।

यहाँ कहते हैं कि ह्व व्यवहार दो प्रकार का है (१) पृथकत्व (२) एकत्व। जहाँ भिन्न दो द्रव्यों में एकता सम्बन्ध दिखाया जाय, उसे पृथकत्व व्यवहार कहा जाता है और जहाँ एक वस्तु में भेद दिखाया जाय, उसे एकत्व व्यवहार कहते हैं। यह दोनों प्रकार का सम्बन्ध धन–धनी, ज्ञान–ज्ञानी में व्यपदेशादि चार प्रकार से दिखाया जाता है। धन अपने नाम, संस्थान, संख्या, विषय ह्व इन चार भेदों से जुदा है और पुरुष अपने नाम, संस्थान, संख्या, विषय रूप चार भेदों से जुदा है; परन्तु धन के संबंध से पुरुष धनी कहलाता है। इसी को पृथकत्व व्यवहार कहा जाता है। ज्ञान और ज्ञानी में एकता है; परन्तु नाम, संख्या, संस्थान, विषयों से ज्ञान का भेद किया जाता है। वस्तु स्वरूप को भलीभाँति जानने के कारण उस ज्ञान के सम्बन्ध से ज्ञानी नाम पाता है। इसको एकत्व व्यवहार कहते हैं।

कवि हीरानन्दजी काव्य की भाषा में कहते हैं ह्व

(दोहा)

ज्ञान थकी ज्ञानी लसै, धन तैं हैं धनवान।
एक माहिं अरु आन महिं यौं दोनों विधि जान।।२४८।।

(सवैया इकतीसा)

जैसैं धनपति–ज्ञानी दोई भिन्न–भिन्न अस्ति ताकै,
भिन्न–भिन्न संस्थान भिन्न संख्य गनै है।
भिन्न विषै दोनों माँहि एक परदेस नाहिं,
धनी ऐसा नाम पावै अन्य एक बनै है।।
तैसैं ज्ञान जीव माँहिं एक अस्ति एक संस–
थान एक संख्या एक विषै एक भेद बनैं है।
'ज्ञानी' व्यपदेस एक एकता प्रकार माहिं,
तैसैं सब भेद नींके श्री जिनेस भनै है।।२४९।।

(दोहा)

जड़ अन्यत परकार है, तरु अन्यत परकार।
सो सब जिनवानी विषै, जथासरूप निहार।।२५०।।

उक्त सवैया में कवि हीरानन्दजी का कहना है कि जैसे धनपति और ज्ञानी ह्व दोनों भिन्न–भिन्न अस्तित्व वाले हैं, भिन्न–भिन्न संस्थान वाले हैं, भिन्न–भिन्न संख्या वाले हैं, भिन्न–भिन्न विषय वाले हैं, भिन्न–भिन्न प्रदेशों वाले हैं, इसके विपरीत ज्ञान और जीव में एक ही अस्ति, एक ही संस्थान, एक ही संख्या और एक ही विषय है। इसप्रकार ज्ञान व ज्ञानी का सारा कथन एकरूप है।

इस विषय में गुरुदेव श्री कानजीस्वामी कहते हैं कि ह्व धन के सम्बन्ध से पुरुष को धनी कहते हैं; परन्तु धन व पुरुष जुदे हैं, दोनों एक नहीं होते। दोनों के अस्तिकाय जुदे हैं। कर्म के कारण आत्मा कर्मी, शरीर के कारण आत्मा शरीरी, प्राणों के कारण आत्मा प्राणी कहा जाता है; परन्तु कर्म, शरीर तथा प्राण से आत्मा का अस्तिकाय जुदा है। दोनों के बीच अभाव की मोटी वज्रशिला है। एक के कारण दूसरा नहीं है। धन चला जाता है; किन्तु पुरुष रहता है। कर्म व शरीर अलग पड़े रह जाते हैं और सिद्ध का आत्मा मोक्ष में अलग रहता है। यदि वे एक अस्तिकाय हों तो कोई जुदा नहीं पड़ना चाहिए। इसलिए कर्म से कर्म वाला वगैरह कहना व्यवहार की अपेक्षा है। वास्तव में ऐसा नहीं है; क्योंकि वे सब परपदार्थ हैं। कर्म आदि के प्रदेशों और आत्मा के प्रदेशों में भिन्नता है।

चैतन्य गुण से आत्मा को ज्ञानी कहते हैं; क्योंकि ज्ञान व आत्मा में प्रदेश भेद रहित एकता है। आत्मा ज्ञान के कारण ज्ञानी कहा जाता है। आत्मा केवलज्ञान के कारण केवली, धर्म के कारण धर्मी, इसी तरह सम्यग्दर्शन ज्ञान व चारित्र के कारण सम्यक्दृष्टि, सम्यग्ज्ञानी एवं सम्यक्चारित्रवान कहलाता है। इनके द्रव्यगुणों में प्रदेश भेद नहीं है।

जैसे कोई व्यवहार में धन के कारण धनी कहा जाता है; पर धन व धनी में प्रदेश भिन्नता है ह्व धन व धनी भिन्न–भिन्न द्रव्य है। धन व धनी में ज्ञान–ज्ञानी की आत्मा अभेद नहीं है; क्योंकि ज्ञान व ज्ञानी में प्रदेश भेद नहीं है और धन व धनी भिन्न–भिन्न दो द्रव्य हैं।

इन दो प्रकार के कथनों द्वारा वस्तुस्वरूप के जाननेवाले पुरुष प्रदेश भेदवाले सम्बन्ध को पृथकत्व कहते हैं और प्रदेशों की एकता के सम्बन्ध को एकत्व कहते हैं।

तात्पर्य यह है कि ह्व व्यवहार दो प्रकार का है। (१) पृथकत्व व्यवहार (२) एकत्व व्यवहार। जहाँ दो द्रव्यों के साथ एकता बताई जाय, वहाँ पृथकत्व व्यवहार है तथा जहाँ एक वस्तु में गुण भेद बताये जायें, वहाँ एकत्व व्यवहार है। जैसे ह्व ज्ञान से ज्ञानी, धर्म से धर्मी कहना, एकत्व व्यवहार है।

इसप्रकार इस गाथा में कहा है कि धन व ज्ञान से आत्मा धनी व ज्ञानी कहा जाता है। यहाँ धन व धनी पृथकत्व का लक्षण है तथा ज्ञान व ज्ञानी एकत्व का लक्षण है। ह्व ऐसा जानना। ●

ब्राह्मी सुन्दरी जैन वनिता संघ का गठन

चन्देरी (म.प्र.) : तीर्थधाम आदीश्वरम् परिसर में श्री अखिलजी बंसल के निर्देशन में श्री गेंदालालजी सर्राफ की अध्यक्षता में ब्राह्मी सुन्दरी जैन वनिता संघ का गठन किया गया। ब्र. सुमतप्रकाशजी ने वनिता संघ की नवगठित कार्यकारिणी को अपना मार्गदर्शन प्रदान करते हुये संगठन के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। सर्वसम्मति से निम्न प्रकार कार्यकारिणी का गठन किया गया -

संरक्षक - श्रीमती ममता जैन, श्रीमती अंगूरी जैन तथा श्रीमती सुनीता बजाज। **परामर्श मण्डल** - श्रीमती विद्या बंसल, श्रीमती गुणमाला जैन, श्रीमती राजकुमारी जैन, श्रीमती रविकांता जैन तथा श्रीमती कल्पना सर्राफ (पार्षद)। **अध्यक्ष** - श्रीमती ज्योति रोकड़िया, **कार्याध्यक्ष** - श्रीमती शोभा हाथीशाह, **उपाध्यक्ष** - श्रीमती अंजना हिरावल, **महासचिव** - श्रीमती अरुणा बंसल, **संयुक्त सचिव** - श्रीमती संध्या जैन, **शिक्षा सचिव** - श्रीमती सुमन कठरया, **सांस्कृतिक सचिव** - श्रीमती समता अलया, **प्रचार सचिव** - श्रीमती ममता गोयल, **आयोजन सचिव** - श्रीमती संगीता सिंघई तथा **संगठन सचिव** - श्रीमती मंजू बैद। वनिता संघ की सभी सदस्याओं ने आदीश्वरम् परिसर में स्थापित भगवान बाहुबली बाल संस्कार केन्द्र को पूर्ण सहयोग प्रदानकर संचालित करने की भावना व्यक्त की। **- ममता गोयल**

ब्र. सुमतप्रकाशजी द्वारा तत्त्वप्रचार

चन्देरी (म.प्र.) : भगवान ऋषभदेव जयन्ती के अवसर पर 7 से 9 मार्च तक त्रिदिवसीय कार्यक्रम के अन्तर्गत ब्र. सुमतप्रकाशजी के दोनों समय चौबीसी जैन मंदिर में षट् लेश्या एवं निश्चय-व्यवहार पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

इस अवसर पर आदीश्वरम् परिसर में पूजन अभिषेक एवं 9 मार्च को भक्तामरजी का विशेष पाठ आयोजित किया गया। भियांदात क्षेत्र के हजारों साधर्मी बंधुओं ने उपस्थित होकर विशेष पूजा अर्चना की।

पाठशाला का शुभारंभ

घुवारा (म.प्र.) : यहाँ डॉ. भारिल्ल की हीरक जयंती समारोह के अवसर पर दिनाँक 23 फरवरी को वीतराग-विज्ञान पाठशाला का शुभारंभ किया गया, जिसमें 42 जैन-अजैन बच्चों ने प्रवेश लिया।

इस अवसर पर छात्रों को सत्साहित्य का वितरण डॉ. भारिल्ल के कर कमलों से हुआ। पाठशाला संचालन एवं अध्यापन हेतु श्री अरविन्दजी जैन एवं श्री प्रमोदजी जैन ने नि:शुल्क सेवायें देने की स्वीकृति प्रदान की।

आजीवन व्यसनों का त्याग

उदयपुर (राज.) : यहाँ दिनाँक 23 जनवरी को अ. भा. जैन युवा फैडरेशन के प्रांतीय उपाध्यक्ष **डॉ. महावीर प्रसादजी जैन** ने रूण्डेडा के रिटर्निंग ऑफिसर के रूप में कार्य करते हुये शपथ ग्रहण समारोह के अवसर पर सरपंच व वार्डपंचों से शराब, बीड़ी-सिगरेट, गुटका आदि बुरे व्यसनों का आजीवन त्याग कराया। इस अवसर पर 16 लोगों ने किसी न किसी बुरी आदत/व्यसन का आजीवन त्याग किया।

टोडरमल मुक्त विद्यापीठ के छात्रों हेतु सूचना

1. मुक्त विद्यापीठ के प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा एवं उनकी उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन का कार्य पूरा हो चुका है। सभी छात्रों /केन्द्रों को उनके प्राप्तांक भी भेजे जा चुके हैं। यदि किसी को अभी तक अपने प्राप्तांकों की सूचना नहीं मिली हो, वे तत्काल कार्यालय से संपर्क करें।

2. जो छात्र पुनर्मूल्यांकन हेतु आवेदन करना चाहते हैं, वे 15 दिन के भीतर अपना एनरोलमेंट नम्बर पीयूष जैन/धर्मेन्द्र जैन या कार्यालय को सूचित करें।

3. मुक्त विद्यापीठ का दूसरा सेमेस्टर प्रारंभ हो चुका है। इसकी परीक्षाओं का आयोजन 1 से 15 जून के बीच किया जायेगा। इसके लिये पेपर सभी केन्द्रों को 25 मई तक भेजे जावेंगे।

4. दूसरे सेमेस्टर का विवरण निम्नानुसार है -

द्विवर्षीय विशारद (प्रथमवर्ष) :	प्रथम प्रश्नपत्र - वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-2
	द्वितीय प्रश्नपत्र - वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3
द्विवर्षीय विशारद (द्वितीयवर्ष) :	प्रथम प्रश्नपत्र - तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2
	द्वितीय प्रश्नपत्र - धर्म के दशलक्षण-70 अंक + भक्तामर स्तोत्र-30 अंक
त्रिवर्षीय सिद्धांतविशारद (प्रथमवर्ष) :	प्रथम प्रश्नपत्र - रत्नकरण्डश्रावकाचार
	द्वितीय प्रश्नपत्र - रामकहानी व आप कुछ भी कहो

नोट ह्न मुक्त विद्यापीठ से संबंधित किसी भी जानकारी के लिये संपर्क करें -
पीयूष जैन - 9785643202, धर्मेन्द्र जैन - 9785643203
संपर्क समय - प्रात: 10 से 12 एवं सायं 3 से 5 तक

हार्दिक बधाई !

जयपुर (राज.) : यहाँ दिनाँक 6 मार्च को श्री महावीर दि. जैन बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में राजस्थान जैन सभा द्वारा **'संतोष का विचार मनुष्य की प्रगति को अवरुद्ध करता है'** विषय पर अन्तर्विद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें 5 विद्यालयों के 10 प्रतियोगियों ने भाग लिया।

प्रतियोगिता में श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के दो छात्रों श्री सर्वज्ञ भारिल्ल ने पक्ष से प्रथम एवं श्री विवेक जैन भिण्ड ने विपक्ष से द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

सर्वाधिक अंक प्राप्त कर टोडरमल महाविद्यालय ने इस वर्ष **चल वैजयन्ती** ट्रॉफी प्राप्त की।

सभा में राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी एवं श्री कमलबाबू जैन आदि उपस्थित थे।

(पृष्ठ 1 का शेष ...)

इस अवसर पर अ.भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा मकरोनिया, गोराबाई ट्रस्ट सागर, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा परकोटा मंदिर, तारण–तरण समाज, अखिल भारतीय गोलापूर्व समाज (श्री सुभाषजी चौधरी, श्री अशोकजी सेठ, श्री मनोजजी बंगेला) एवं परवार समाज के प्रतिनिधियों ने डॉ. भारिल्ल का शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति, तिलक एवं माल्यार्पण द्वारा सम्मान किया।

कार्यक्रम के दौरान डॉ. भारिल्ल के करकमलों से गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रवचनों की डी.वी.डी. का विमोचन तथा टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पं. विपुलजी मोदी द्वारा संपादित **सागर सरताज** पत्रिका के 'डॉ. भारिल्ल हीरकजयंती विशेषांक' का विमोचन हुआ।

समारोह के अन्त में डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि हीरक जयंती का तत्त्व की प्रभावना में बहुत बड़ा योगदान है; कार्यक्रम में तत्त्वप्रचार की ही मुख्यता है, जन्मदिन तो निमित्तमात्र है। इसके पश्चात् पण्डित रूपचंदजी बंडा, पण्डित शिखरचंदजी, पण्डित अखिलेशजी शास्त्री, पण्डित सन्मतिजी शास्त्री, पण्डित निर्मलजी एवं कु.सीमा जैन ने डॉ. भारिल्ल द्वारा देश–विदेश में किये गये अभूतपूर्व योगदान संबंधी अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त किये।

अभिनंदन समिति में अध्यक्ष श्रीमंत सेठ श्री डालचंदजी जैन (पूर्व सांसद), संयोजक श्री दिनेशजी जैन एडवोकेट, श्री गुलजारीलालजी जैन, श्री प्रमोदजी जैन, पं.अरुणजी मोदी, श्री संतोषजी जैन (नीमवाले), श्री आदित्यजी जैन, श्री सुधीरजी सहयोगी एवं श्री मुकेशजी समैया प्रमुख थे।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित अरुणकुमारजी मोदी ने किया।

• दलपतपुर में हीरक जयन्ती समारोह ह

दलपतपुर–सागर में दिनाँक 15 मार्च को मुमुक्षु मण्डल एवं सकल समाज दलपतपुर के तत्त्वावधान में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री दामोदरजी जैन शाहगढ (अध्यक्ष–सिद्धक्षेत्र नैनागिरि) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री गुलाबचंदजी (गोलन) उपस्थित थे। मंचासीन अतिथियों में श्री सिंघई कन्हैयालालजी, श्री कपूरचंदजी, श्री मोतीलालजी संधेलिया, श्री लक्ष्मीचंदजी लोहिया, श्री फूलचंदजी मोदी, पण्डित अजयजी जैन, श्री पंचमलालजी चांदर (सरपंच), श्री गणेशजी महाराज, बाबू एच.एन.गोस्वामी एवं श्री कोमलसिंहजी उपस्थित थे।

इस अवसर पर अ.भा. जैन युवा फैडरेशन, मुमुक्षु मण्डल, सकल समाज दलपतपुर एवं मुमुक्षु मण्डल बण्डा ने डॉ. भारिल्ल का तिलक, माल्यार्पण तथा शॉल–श्रीफल द्वारा सम्मान किया।

इस अवसर पर श्री विनोदजी मोदी, श्री महेन्द्रजी चौधरी, श्री निखलेशजी शास्त्री ने डॉ. भारिल्ल के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये।

अन्त में डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि यह सम्मान मेरा नहीं; अपितु जिनवाणी एवं गुरुदेवश्री का सम्मान है।

समारोह में श्री राजेशजी दिवाकर, श्री वैभवजी मोदी, श्री सुपेन्द्रजी मोदी, श्री पुष्पेन्द्रजी चौधरी, श्री रमेशजी दिवाकर, श्री अरविन्दजी लोहिया, शैलु लोहिया, श्री संतोषजी चौधरी एवं श्री सुनीलजी मोदी का महत्वपूर्ण योगदान था। संचालन पं. अरुणजी मोदी ने किया। सभा के पूर्व डॉ. भारिल्ल के **अहिंसा** विषय पर मार्मिक प्रवचन ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

• गौरझामर के लिये ऐतिहासिक उपलब्धि ह

गौरझामर–सागर में दिनाँक 13 मार्च को जैन युवा फैडरेशन द्वारा डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन एवं हीरक जयंती का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल के **आत्मा–परमात्मा** विषय पर प्रवचन का लाभ मिला। प्रवचनोपरान्त सभा हीरक जयन्ती समारोह में बदल गई।

सभा की अध्यक्षता क्षेत्रीय पूर्व विधायक श्री सुनीलजी जैन ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री राजकुमारजी ठाकुर बरकोरी (पूर्व जिला उपाध्यक्ष) तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में सकल दि. जैन समाज के पूर्व अध्यक्ष श्री जीवनलालजी धुरा एवं समाज के वरिष्ठ सदस्य श्री मुलायमचंदजी चौधरी गुगवारा आदि मंचासीन थे।

इस अवसर पर श्री विनयजी जैन (प्राचार्य–शासकीय हाईस्कूल), श्री वसंतजी मिठिया (अध्यक्ष–महावीर जिनालय), श्री कोमलसिंहजी लोधी (ग्राम के जनपद सदस्य), श्री किशनजी खटीक (ग्राम सरपंच प्रतिनिधि), श्री अयोध्याप्रसादजी तिवारी (ग्राम थाना प्रभारी), श्री जगदीशजी श्रीवास्तव (सेवानिवृत्त शिक्षक), श्री कैलाशजी जैन (पूर्व सरपंच), श्री कुन्दनलालजी चौरसिया (पत्रकार), श्री सनतजी जैन आदि महानुभाव सभा में उपस्थित थे।

सभी लोगों ने डॉ. भारिल्ल का शॉल एवं माल्यार्पण से स्वागत किया। अनेकों पदाधिकारियों ने डॉ. भारिल्ल का सम्मान कर अपने को गौरवान्वित महसूस किया। छोटे से गाँव में डॉ. भारिल्ल का पहुँचना, प्रवचन एवं हीरक जयन्ती समारोह मनाया जाना गौरझामर के लिये एक ऐतिहासिक उपलब्धि रही।

संचालन श्री अरुणजी शास्त्री मकरोनिया तथा आभार प्रदर्शन मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष श्री सुधीरजी जैन ने किया। **–निहाल जैन**

• सिलवानी में प्रवचन एवं हीरक जयन्ती ह

सिलवानी–रायसेन में दिनाँक 12 मार्च को श्री तारण–तरण दि.जैन चैत्यालय में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया।

रात्रि 7 बजे प्राचार्य प्रजा सेवकजी के निवास से बडी धूम–धाम एवं गाजे–बाजे के साथ डॉ. भारिल्ल को समारोह स्थल तारण–तरण चैत्यालय लाया गया। रास्ते में जगह–जगह समाज के लोगों ने माला, शॉल एवं श्रीफल से आपका स्वागत किया।

समारोह स्थल पर स्वाध्याय मण्डल सिलवानी,पार्श्वनाथ जैन मंदिर समिति, बेगमगंज मुमुक्षु मण्डल, शोभापुर जैन समाज की ओर से श्री महेशजी जैन, तारण–तरण पाठशाला की ओर से श्रीमती सुषमा जैन एवं मा. जयकुमारजी समैया, तारण–तरण दि.जैन समाज की ओर से मंत्री श्री अशोकजी जैन मल्लूभाई एवं अध्यक्ष श्री ऋषभजी जैन आदि ने डॉ. भारिल्ल का विशेष सम्मान किया। इनके अतिरिक्त श्री शिखरचंदजी जैन, श्री संजयजी समैया एवं पण्डित श्रवणकुमारजी जैन ने भी व्यक्तिगतरूप से सम्मान किया।

कार्यक्रम के पूर्व डॉ. भारिल्ल के **णमोकार महामंत्र** के महत्व पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला। संपूर्ण जैन समाज ने डॉ. भारिल्ल द्वारा किये गये तत्त्वप्रचार की बहुत प्रशंसा की। संचालन पं.समकितजी शास्त्री एवं मंगलाचरण श्री संजयजी समैया ने किया। **ह जयकुमार जैन शिक्षक**

अपूर्व अवसर ! अपना बालक भेजिये – आत्मार्थी विद्वान पाइये !! अवश्य लाभ लें !!!

आध्यात्मिक सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की साधनाभूमि

स्वर्णपुरी सोनगढ में

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह का

भव्य शुभारंभ

1. आत्मार्थी अध्यापकों द्वारा वीतरागी तत्त्वज्ञान और सदाचार के संस्कारों का सिंचन।
2. कक्षा आठवीं से बारहवीं तक हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के उच्च कोटि के विद्यालय में लौकिक शिक्षा की व्यवस्था।
3. बालकों के सर्वांगीण विकास के लिये गोष्ठी, वाद–विवाद, व्याख्यान आदि अन्य अनेक प्रवृत्तियाँ।
4. शारीरिक विकास के लिये व्यायाम, योग, खेलकूद आदि का नियमित आयोजन।
5. विज्ञान, गणित, अंग्रेजी जैसे कठिन विषयों के अध्ययन के लिये विशेष कक्षायें।
6. संपूर्ण जैन समाज के विद्यार्थियों के लिये।
7. बारहवीं के बाद उच्च शिक्षा के लिये योग्यता के आधार पर छात्रवृत्ति।
8. संपूर्ण सुविधा नि:शुल्क।

तुरंत संपर्क करें और प्रवेश फार्म मंगायें। फार्म जमा कराने की अंतिम तिथि 25 अप्रैल, 2010 है।

●ह्न संपर्क सूत्र ह्न●

श्री कुन्दकुन्द कहान परमार्थिक ट्रस्ट, 302, कृष्णाकुंज, प्लॉट नं 30, वी. एल. मेहता मार्ग,

विले पार्ले (वेस्ट), मुम्बई–400056 फोन : 022–26130820, 26104912

Email - vitragva@vsnl.com Form Avilable at Our Website - www. vitragvani.com

गुरुदेवश्री के प्रवचन प्राप्त करें !

पूर्व में श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रवचनों की सी.डी. एवं कम्प्यूटर प्रत्येक मण्डल को भेंट स्वरूप दिये गये थे। अब कम्प्यूटर की नई हार्ड–डिस्क में संपूर्ण 9000 प्रवचन लोड करके दिये जा रहे हैं। स्वाध्याय मण्डल का प्रार्थना–पत्र प्राप्त होने पर यह हार्ड–डिस्क नि:शुल्क प्रदान की जायेगी। इसके अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति **I-POD/MP3 Player** में अपनी रुचि के अनुसार प्रवचन लोड करवाना चाहेगा तो उसे वह प्रवचन भरकर दिये जायेंगे। आप निम्न पते पर सम्पर्क करें ह्न

श्री कुन्दकुन्द–कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, 302, कृष्ण कुंज, प्लाट नं. 30, नवयुग को. हा. सो., वी. एल. मेहता मार्ग, विलेपार्ले (वेस्ट) मुम्बई – 400057, फोन नं. – 022–2613 0820, 2610 4912

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

49 बारहवाँ प्रवचन

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

व्रतादिक के संदर्भ में पण्डितजी कहते हैं कि व्रतादिक करके भी अनेक प्रकार के शृंगार करते हैं, कुतूहलादि करते हैं, मनोरंजन करते हैं, प्रमादादिरूप प्रवर्तते हैं। व्रत-उपवास तो विषयादिक घटाने के लिए किये जाते हैं और ये लोग व्रत-उपवास करके विषयादिक और मानादिक का पोषण करते हैं।

अन्त में पण्डितजी कहते हैं कि अधिक कहाँ तक कहें, जहाँ विषय-कषाय बढ़ते हों और धर्म माने; वे सब कुधर्म की क्रियायें हैं।

बारह माह तो खान-पान की हालत यह है कि न रात का ठिकाना, न दिन का ठिकाना, न भक्ष्याभक्ष्य का विचार; जब चाहे, खड़े-खड़े, चलते-फिरते खाते ही रहते हैं, पान-तम्बाकू दिन भर मुँह में डाले ही रहते हैं और दशलक्षण पर्व में दश दिन के उपवास कर डालते हैं। उपवास की समाप्ति पर बड़ा जुलूस निकालते हैं; जिसमें उपवास करनेवाले लड़के-लड़कियाँ, स्त्री-पुरुष, दूल्हे-दुल्हिन जैसे सज कर बैठते हैं, बैण्डवालों के साथ चलते हैं और साथ में नाच-गाना भी चलता रहता है।

पण्डितजी का कहना यह है कि उपवास करने के पहले बारहमासी जीवन को शुद्ध सात्त्विक बनाना आवश्यक है। कभी तो दिन भर खाते-पीते रहे और कभी पूर्ण निराहार ह्न यह क्या है? उपवास में तो नहाना-धोना और दंत-मंजन भी नहीं होता है तो फिर शृंगार कैसा?

उपवास के चक्कर में दश दिन का पूरा पर्व यों ही आलस में पड़े-पड़े चला जाता है, न पूजन-पाठ, न स्वाध्याय, न प्रवचन सुनना आदि हो पाता है। अरे, भाई! व्रत-उपवास तो मानादिक के घटाने के लिए किये जाते हैं, विषयों से बचने के लिए किये किये जाते हैं; परन्तु यहाँ तो विषय-कषाय बढते दिखाई देते हैं।

इन सब प्रवृत्तियों को पण्डितजी यहाँ कुधर्म की संज्ञा दे रहे हैं।

व्रतादिक करनेवाले सभी लोग ऐसे होते हैं ह्न यह बात नहीं है। तत्त्वाभ्यासी ज्ञानीजन तो जो व्रतोपवास आदि करते हैं, वे शुद्ध-सात्त्विक ही होते हैं; किन्तु यहाँ बात ही कुधर्म संबंधी प्रवृत्तियों की चल रही है; अत: उन लोगों की ही बात हो रही है, जिनको न तो जिनधर्म का विशेष परिचय है, न तत्त्वाभ्यास है और जो लोग न तो कभी स्वाध्याय करते हैं, न सत्समागम द्वारा आत्मा-परमात्मा को समझने की कोशिश करते हैं; मात्र देखा-देखी या मानादिक के पोषण के लिए मात्र पर्वों के दिनों में ही थोड़े-बहुत व्रत-उपवासादि कर लेते हैं।

हमारी ये वृत्तियाँ-प्रवृत्तियाँ विभिन्न रूपों में देखी जाती हैं। स्वयं को सजने-समरने में उम्र के कारण लाज आती हो तो बच्चों को सजायेंगे, घर को सजायेंगे और नहीं तो भगवान को ही सजाने लगेंगे।

यदि दिगम्बर जैनों को भगवान को सजाना संभव नहीं होता तो वेदी का शृंगार करेंगे, भगवान के परिकर को सजायेंगे; अपनी सजावट करने की भावना की पूर्ति कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में पूरी अवश्य करेंगे।

अन्त में पण्डितजी कहते हैं कि काल के दोष से जैनधर्म में भी कुधर्म की प्रवृत्तियाँ आ गई हैं और इन प्रवृत्तियों को भी हम एक-दूसरे को देख-देखकर अपनाते हैं। इसप्रकार ये फैलती ही जाती हैं।

कुधर्म संबंधी चर्चा का समापन करते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं ह्न

''तथा जिनमन्दिर तो धर्म का ठिकाना है। वहाँ नाना कुकथा करना, सोना इत्यादि प्रमादरूप प्रवर्तते हैं; तथा वहाँ बाग-बाड़ी इत्यादि बनाकर विषय-कषाय का पोषण करते हैं। तथा लोभी पुरुष को गुरु मानकर दानादिक देते हैं व उनकी असत्य स्तुति करके महंतपना मानते हैं। इत्यादि प्रकार से **विषय-कषायों को तो बढ़ाते हैं और धर्म मानते हैं; परन्तु जिनधर्म तो वीतरागभावरूप है, उसमें ऐसी विपरीत प्रवृत्ति काल दोष से ही देखी जाती है। इसप्रकार कुधर्म सेवन का निषेध किया।**[१]''

देखो, जिनमंदिर में भी हमारी भूल से किसप्रकार की कुप्रवृत्तियाँ (कुधर्म) चलने लगी हैं; यहाँ इसकी चर्चा की जा रही है। अनेकप्रकार की विकथायें करना भी एकप्रकार से कुधर्मरूप प्रवृत्ति ही है। राजकथा भी एकप्रकार से विकथा ही है। चार प्रकार की विकथाओं में इसका भी नाम आता है। आजकल तो सबसे अधिक चर्चा इसी की होती है। दैनिक समाचार-पत्रों में इसके अतिरिक्त और होता भी क्या है?

आजकल तो सबसे पहले ये समाचार-पत्र ही पढ़े जाते हैं। मंदिरों में भी इनकी व्यवस्था रहती है।

अधिकांश मंदिरों में दरवाजे पर अनेकप्रकार के दैनिक समाचार-पत्र पड़े रहते हैं और जो भी दर्शन-पूजन करने आते हैं; सबसे पहले वे इन्हीं का स्वाध्याय करते हैं।

पण्डितजी इस राजकथा को कुधर्म कह रहे हैं; अत: कम से कम **मंदिर में तो इसकी व्यवस्था किसी भी स्थिति में नहीं करना चाहिए। जिनको समाचार-पत्र पढ़ने होंगे, वे अपने घर मंगवा कर पढेंगे, मंदिर में हम क्यों विकथा की सामग्री जुटायें।**

मंदिर में सोना भी किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है।

जैन मंदिर आत्मसाधना के लिए बनाये जाते हैं, उसमें बाग-बगीचे बनाने की प्रवृत्ति का भी पण्डितजी ने डटकर विरोध किया है।

आज की स्थिति तो यह है कि बड़े लोग जो जिनमंदिर बनवाते हैं,

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, छठवाँ अधिकार, पृष्ठ १९०

उसमें मंदिर के चारों ओर बाग-बगीचे लगा देते हैं। बीच में छोटा सा मंदिर, उसके सामने विशाल कृत्रिम तालाब और चारों ओर सुन्दरतम फुलवारी और न जाने क्या-क्या लगा देते हैं। **मैं किसी स्थान विशेष का नाम नहीं लेना चाहता; पर यदि आप चारों ओर निगाह डालकर देखेंगे तो आपको सबकुछ सहज ही स्पष्ट हो जायेगा।**

ऐसे स्थानों पर दर्शन-पूजन करनेवाले कम, घूमने-फिरनेवाले अधिक आते हैं। जो जिनदेव के दर्शन करने आते हैं; वे भी मंदिर में कम और बाग-बगीचे में अधिक काल तक बैठते हैं। इसप्रकार वे वहाँ जाकर आत्मसाधना कम और विषयापूर्ति अधिक करते हैं।

मंदिर जाने के नाम पर लोग वहाँ के बाग-बगीचों में बैठकर विकथायें करते हैं, हंसी-मजाक करते हैं, किसी की बुराई-भलाई करते हैं और न मालूम क्या-क्या करते हैं ?

यह प्रवृत्ति अब साधुवर्ग में भी तेजी से पनप रही है। जब किसी साधु का जरा सा भी प्रभाव बढ़ता है, तब वह तत्काल एक टेकड़ी खरीद लेता है और उसे तीर्थ के रूप में विकसित करने में सारी शक्ति लगा देता है। वह उस पहाड़ी को बगीचे के रूप में बदल देता है और फिर वहाँ क्या-क्या होता है, कुछ कहा नहीं जा सकता।

जिस गति से पुराने तीर्थ और मंदिर जीर्ण-शीर्ण होते जा रहे हैं, उससे भी तीव्र गति से नये तीर्थों का निर्माण होता जा रहा है।

ये नये तीर्थ सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से संपन्न होते हैं। इनमें आराम से रहने, खाने-पीने और मनोरंजन की वे सभी सुविधायें उपलब्ध रहती हैं; जो शायद आपके घर में भी आपको सहज उपलब्ध न हों। पुराने तीर्थों पर भी धीरे-धीरे सभी सुविधायें जुटती जा रही हैं। **नये-पुराने सभी तीर्थ एकप्रकार से पिकनिक स्पॉट के रूप में विकसित होते जा रहे हैं। अब यहाँ लोग पिकनिक मनाने आया करेंगे, धर्मसाधना करने नहीं।**

अब नवधनाढ्य रईसों की आत्मसाधना ऐसे स्थलों पर ही होती है। न मालूम क्या होता जा रहा है इस समाज को।

यदि आज पण्डित टोडरमलजी होते तो क्या वे यह सब देख पाते ?

लगता है पण्डितजी को इसका अनुमान था। पण्डितजी के समय में भी इसप्रकार की प्रवृत्तियाँ पनप रही थीं; इसलिए तो वे लिखते हैं कि जो जिनमंदिर धर्म के स्थान हैं, वहाँ अनेकप्रकार की कुकथायें करना, सोना, बाग-बगीचे लगाकर विषय-कषाय का पोषण करना और उनके निर्माताओं को गुरु मानकर दानादि देना और उनकी असत्य स्तुति करके उनके महंतपने को पोषण करना ह्न इसप्रकार विषय-कषायों का पोषण करते हुए उन्हें धर्म मानना ह्न ये सब कुधर्मरूप प्रवृत्तियाँ इस वीतरागी जिनधर्म में भी कालदोष से दिखाई दे रही हैं। **(क्रमशः)**

दमोह में डॉ. भारिल्ल की हीरक जयन्ती

दमोह (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 17 व 18 मार्च को तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया।

दिनांक 18 मार्च को तारण-तरण चैत्यालय के सामने बने विशाल पंडाल में आयोजित समारोह की अध्यक्षता श्री विमलकुमारजी लहरी ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में नगरपालिका अध्यक्ष श्री मनुजी मिश्रा उपस्थित थे।

इस अवसर पर तारण तरण समाज की ओर से श्री सुनीलजी प्रधान, मुमुक्षु मण्डल की ओर से श्री पदमकुमारजी अभाना एवं श्री विनोदकुमारजी अभाना ने डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री मनुजी मिश्रा ने अपने वक्तव्य में डॉ. भारिल्ल के **अहिंसा** विषय पर हुये प्रवचन की प्रशंसा करते हुये कहा कि 'वचन एवं काय की हिंसा तो सभी रोक लेते हैं; परन्तु मन की हिंसा को रोकने का कार्य धर्म का है, यह बात मैंने जीवन में पहली बार सुनी है, मेरे लिये यह नयी दृष्टि है।'

सम्मान समारोह में समाज के सभी लोगों ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लिया एवं डॉ. भारिल्ल द्वारा किये गये तत्त्वप्रचार के कार्यों की बहुत प्रशंसा की।

ज्ञातव्य है कि दमोह में डॉ. भारिल्ल के तीन प्रवचनों का लाभ मिला। सेठ मंदिर में ग्रंथाधिराज समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार पर एवं णमोकार महामंत्र पर प्रवचनों का लाभ मिला तथा तारण-तरण दि.जैन चैत्यालय के सामने बने पंडाल में अहिंसा विषय पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

बण्डा में डॉ. भारिल्ल का उद्बोधन

बण्डा (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 15 मार्च को प्रातः कुन्दकुन्दकहान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के संक्षिप्त उद्बोधन का लाभ प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल के संक्षिप्त प्रवचन के पश्चात् हुये कार्यक्रम में समाज के अध्यक्ष श्री देवेन्द्रकुमारजी भाईजी, मंत्री श्री राजकुमारजी एवं स्थानीय विद्वान पण्डित रूपचंदजी की उपस्थिति रही। समयाभाव के कारण सभी महानुभावों ने दलपतपुर जाकर डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया।

सम्मान समारोह में समाज के सभी लोगों ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लिया एवं डॉ. भारिल्ल द्वारा किये गये तत्त्वप्रचार के कार्यों की बहुत प्रशंसा की।

हार्दिक आमंत्रण...

44 वाँ शिक्षण प्रशिक्षण शिविर दिनांक **16 मई से 2 जून, 2010** तक इस वर्ष **देवलाली-नासिक (महा.)** में आयोजित होने जा रहा है। सभी साधर्मी बन्धुओं को पधारकर धर्म लाभ लेने हेतु हार्दिक आमंत्रण है। श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय की प्रवेश प्रक्रिया भी इसी दौरान सम्पन्न होगी। इच्छुक छात्र आवेदन फार्म जयपुर कार्यालय से मंगाकर भरकर भेजें एवं देवलाली पहुँचे।

आवास की व्यवस्था हेतु अपने पहुँचने की पूर्व सूचना 1 मई तक जयपुर कार्यालय में अवश्य भेजें।

शोक समाचार

1. उज्जैन (म.प्र.) निवासी श्री बेलजीभाई शाह का दिनाँक 3 मार्च को पंचपरमेष्ठी का स्मरण करते हुये शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप सरल स्वभावी, स्वाध्यायप्रेमी एवं तत्त्वमर्मज्ञ थे। आपने लगभग 25 वर्षों तक गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सानिध्य में रहकर उनकी वाणी का लाभ लिया था। आप लगभग 25 वर्षों से मुमुक्षु समाज में प्रवचनार्थ जाते थे। आपके देहावसान से मुमुक्षु समाज को अपूरणीय क्षति हुई है। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 1000/–रुपये प्राप्त हुये हैं।

2. चण्डीगढ निवासी श्री एच. सी. जैन का दिनाँक 23 फरवरी को 91 वर्ष की आयु में अत्यंत शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत स्वाध्यायी थे; प्रात: 4 बजे से ही आप स्वाध्याय प्रारंभ कर देते थे। टोडरमल स्मारक से किसी भी नई पुस्तक का प्रकाशन होने पर आप तुरंत मंगाया करते थे। आपकी स्मृति में नई पुस्तक के प्रकाशन हेतु आपकी धर्मपत्नी श्रीमती किरणकुमारी जैन द्वारा दस हजार रुपये प्राप्त हुये हैं।

3. चेन्नई (तमिलनाडु) निवासी श्रीमती पुष्पाबेन धर्मपत्नी श्री छगनराज भण्डारी का दिनाँक 6 फरवरी को 69 वर्ष की आयु में शान्त परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप सरल स्वभावी, शान्त एवं धार्मिक महिला थीं। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान हेतु 1000/– एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 500/–रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही भावना है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

3 अप्रैल	कारंजा	प्रवचन एवं हीरक जयंती
4 अप्रैल (सायं)	उभेगाँव	प्रवचन एवं हीरक जयंती
5 व 6 अप्रैल	छिन्दवाड़ा	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
7 व 8 अप्रैल	नागपुर	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
9 अप्रैल	खामगाँव	प्रवचन एवं हीरक जयंती
9 अप्रैल (सायं)	शिरपुर	दर्शन
10 अप्रैल (प्रात:)	वाशिम	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
10 व 11 अप्रैल	हिंगोली	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
11 अप्रैल (सायं)	अकोला	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
13 व 14 अप्रैल	जबलपुर	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
15,16 एवं 18 अप्रैल	दिल्ली	प्रवचन एवं अभिनन्दन समारोह
17 अप्रैल	अलीगढ	मंगलायतन विश्वविद्यालय सेमिनार
2 मई	वैशाली	....
11 मई से 2 जून	देवलाली	गुरुदेव जयंती, प्रशिक्षण शिविर व हीरक जयन्ती समापन समारोह
4 जून से 18 जुलाई	विदेश	धर्म प्रचारार्थ
1 से 10 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिक्षण शिविर
04 से 11 सितम्बर	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण
12 से 22 सितम्बर	बड़ौदा	दशलक्षण महापर्व

खड़ैरी में डॉ. भारिल्ल की हीरक जयन्ती

खड़ैरी (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 15 एवं 16 मार्च को अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह बड़ी धूम-धाम से आयोजित किया गया।

दिनांक 16 मार्च को आयोजित हीरक जयंती समारोह की अध्यक्षता श्रीमंत सेठ श्री माणिकचंदजी सागर ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुखदयालजी देवड़िया केसली, श्री संतोषजी जैन (नीमवाले) सागर, सुधा मलैया दमोह, श्री लखनजी पटेल दमोह, श्री सुनीलजी जैन इंजी. छतरपुर, श्री हेमन्तजी छाबड़ा दमोह, श्री हितेन्द्रजी शास्त्री प्राचार्य नवोदय विद्यालय हटा आदि के अतिरिक्त अनेक स्थानीय एवं समीपस्थ विद्वान भी मंचासीन थे।

इस अवसर पर **डॉ. भारिल्ल : एक बहुमुखी व्यक्तित्व** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय विद्वानों में पण्डित राजेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित रामनरेशजी शास्त्री, पण्डित नितिनजी शास्त्री, पण्डित पंकजजी शास्त्री, डॉ. राजेशजी जैन, कु. अर्पणा जैन, कु. कविता जैन एवं पण्डित चेतनजी शास्त्री बकस्वाहा ने भाग लिया। संचालन पण्डित मनीषजी शास्त्री नागपुर ने किया। तत्पश्चात सर्वप्रथम खड़ैरी समाज ने डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया तथा **तीर्थरत्न** की उपाधि से अलंकृत किया।

इस अवसर पर बटयागढ, फुटेरा, नरसिंहगढ, दमोह, अभाना, बकस्वाहा, हीरापुरा, अमरमऊ, शाहगढ, बड़ामलहरा, घुवारा, भगवा, छतरपुर, सागर, बंडा, केरबना, बम्होरी, बरां, पिपरिया, रहली आदि स्थानों से पधारे महानुभावों ने भी डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया। मंचस्थ सुधामलैया ने डॉ. भारिल्ल की साहित्य साधना की बहुत प्रशंसा की एवं उनके साहित्य का अध्ययन करने का संकल्प व्यक्त किया। सम्मान के पश्चात् डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि हीरक जयंती समारोह का उद्देश्य लोगों में जिनवाणी की सेवा करने की भावना जागृत करना है।

कार्यक्रम के पूर्व डॉ. भारिल्ल का णमोकार महामंत्र पर सारगर्भित प्रवचन हुआ, जिसका लाभ जैन-अजैन सभी लोगों ने लिया। समारोह में आस-पास के 23 गाँवों एवं शहरों के लगभग 500 लोग उपस्थित थे। सकल दि. जैन समाज, दि. जैन तारण-तरण समाज एवं जैन युवा फैडरेशन के सहयोग से हुये इस कार्यक्रम का निर्देशन मुमुक्षु मण्डल ने तथा आयोजन जैन युवा शास्त्री परिषद ने किया।

प्रकाशन तिथि : 28 मार्च 2010

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर – 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127

पूजन प्रशिक्षण सम्पन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ शांतिनाथ दि. जैन मंदिर सैक्टर - 11 में अ.भा.जैन महिला फैडरेशन के तत्त्वावधान में संचालित वीतराग-विज्ञान रविवारीय पाठशाला के बच्चों को पूजन प्रशिक्षण दिया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के प्रदेश प्रभारी पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री ने बच्चों को पूजन प्रशिक्षण दिये जाने की प्रशंसा करते हुये पूजन एवं देवदर्शन का महत्व पद्मपुराण के आधार से बताया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता फैडरेशन के जिला प्रभारी पण्डित खेमचंदजी जैन ने की। आयोजन में लगभग 800 बच्चों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती नीलम जैन ने एवं आभार प्रदर्शन श्रीमती आशा सिंघवी ने व्यक्त किया। **– प्रक्षाल जैन**

गुरुदेवश्री के प्रवचन प्राप्त करें !

पूर्व में श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रवचनों की सी.डी. एवं कम्प्यूटर प्रत्येक मण्डल को भेंट स्वरूप दिये गये थे। अब कम्प्यूटर की नई हार्ड-डिस्क में संपूर्ण 9000 प्रवचन लोड करके दिये जा रहे हैं। स्वाध्याय मण्डल का प्रार्थना-पत्र प्राप्त होने पर यह हार्ड-डिस्क निःशुल्क प्रदान की जायेगी। इसके अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति **I- POD/MP3 Player** में अपनी रुचि के अनुसार प्रवचन लोड करवाना चाहेगा तो उसे वह प्रवचन भरकर दिये जायेंगे। हार्ड-डिस्क मंगाने या प्रवचन लोड कराने हेतु निम्न पते पर सम्पर्क करें ह्न

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, 302, कृष्ण कुंज, प्लाट नं. 30, नवयुग को. हा. सो., वी. एल. मेहता मार्ग, विलेपार्ले (वेस्ट) मुम्बई - 400057 फोन नं. - 022-2613 0820, 2610 4912

संपूर्ण समयसार परमागम कंठस्थ

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय में शास्त्री तृतीय वर्ष में अध्ययनरत छात्र चिन्तामण भूस औरंगाबाद (महा.) ने समयसार परमागम की संपूर्ण 415 गाथायें कंठस्थ कर सुनाई एवं गाथा नं. बोलते ही उस नम्बर की गाथा सुनाई।

इस प्रसंग पर महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, श्रीमती कमलाबाई भारिल्ल आदि ने छात्र की बहुत प्रशंसा की। इस छात्र को प्रशिक्षण शिविर देवलाली में पुरस्कृत किया जावेगा।

शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर संपन्न

चैतन्यधाम (गुज.) : यहाँ दिनाँक 25 से 30 दिसम्बर तक अ.भा.जैन युवा फैडरेशन द्वारा ग्यारहवाँ तत्त्वज्ञान शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानंद सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित निलेशभाई मुम्बई एवं पण्डित दीपकभाई अहमदाबाद के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। **– संदीप शास्त्री**

श्री योगसार मण्डल विधान संपन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ श्री महावीर दि. जैन मंदिर के 18 वें वार्षिकोत्सव के पावन प्रसंग पर श्री योगसार मण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिरि द्वारा मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं योगसार ग्रंथ के आधार से मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त डॉ. मुकेशजी शास्त्री तन्मय, स्थानीय विद्वान पण्डित राकेशजी शास्त्री, पण्डित विपिनजी शास्त्री, पण्डित श्रुतेशजी शास्त्री, पण्डित अशोकजी शास्त्री, पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री, पण्डित मनीषजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रजी राठी, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित रविन्द्रजी शास्त्री, पण्डित पंकजजी शास्त्री, पण्डित धवलजी शास्त्री आदि विद्वानों का समय-समय पर लाभ मिला।

इस विधान का आयोजन श्रीमती शीलादेवी मुलायमचंदजी सिंघई परिवार द्वारा किया गया। ध्वजारोहणकर्त्ता श्री कल्पेशकुमार विनोदकुमार जैन नागपुर थे तथा मंगल कलश स्थापना डॉ. विमला सिंघई, डॉ. शकुन सिंघई, श्रीमती चित्रा सिंघई परिवार द्वारा हुई।

इस वार्षिकोत्सव के पावन प्रसंग पर भगवान सुपार्श्वनाथ के निर्वाणोत्सव के उपलक्ष्य में डॉ. सुरेशजी सिंघई, श्री शिखरचंदजी मोदी, श्री जयकुमारजी देवड़िया परिवार द्वारा निर्वाण लाडू चढ़ाया गया तथा भगवान चन्द्रप्रभ का केवलज्ञान कल्याणक उत्साह के साथ मनाया गया। विधान के संपन्न होने के उपलक्ष्य में विशाल जिनवाणी शोभायात्रा जुलूस का आयोजन किया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य डॉ. विनोदजी शास्त्री चिन्मय के कुशल निर्देशन में श्री अनुभवजी जैन गुना के सहयोग से संपन्न हुये।

–मनीष सिद्धांत एवं अखिलेश जैन

भगवान आदिनाथ जयंती संपन्न

अजमेर (राज.) : यहाँ दिनाँक 9 मार्च को श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में भगवान आदिनाथ जयंती महोत्सव बहुत हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर मंगलायतन से पधारे पण्डित अशोकजी एवं पण्डित देवेन्द्रजी का ग्रंथाधिराज समयसार पर हुये प्रवचनों का लाभ मिला। प्रातः भगवान आदिनाथ की पूजन के साथ ही सोलहकारण विधान का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रवचनों की डी.वी.डी. सेट का विमोचन श्री पूनमचंदजी लुहाड़िया द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का संचालन व निर्देशन पण्डित अश्विनजी नानावटी द्वारा किया गया।

सिलवानी में तत्त्वप्रचार

सिलवानी–रायसेन (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 19 से 25 फरवरी तक सकल तारण तरण दि. जैन समाज द्वारा श्री तारण तरण दि. जैन चैत्यालय में **'भेद विज्ञान आत्म जागृति शिविर'** का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा जयपुर द्वारा ग्रंथाधिराज समयसार की 198 से 205 तक की गाथाओं पर सरल सुबोध भाषा में प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त तारण-तरणस्वामी द्वारा रचित श्री पण्डित पूजाजी ग्रंथ की 9वीं गाथा पर पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी पंकज छिंदवाड़ा द्वारा प्रवचन का लाभ मिला। साथ ही पण्डित धर्मेन्द्रजी अमरवाडी, श्री कस्तूरचंदजी भोपाल, पण्डित समकितजी शास्त्री सिलवानी, पण्डित सचिनजी शास्त्री, पण्डित आशीषजी शास्त्री एवं पण्डित मोहितजी शास्त्री के प्रवचनों का भी लाभ मिला।

– जयकुमार जैन

डॉ. भारिल्ल का 2010 में विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। यह उनकी 28वीं विदेश यात्रा है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्न स्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा के लिए वहाँ के फोन, फैक्स एवं ई.मेल दिये जा रहे हैं, जहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे।

उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है ह्न

क्र.	शहर	सम्पर्क–सूत्र	दिनांक
1.	लन्दन	**Bhimji Bhai Shah 192-384-0833** **bhimji@hevika.com** **Jayanti Bhai (Gutka)** **0044-208 907 8257 (H)**	4 से 9 जून
2.	लास एंजिल्स	**Atul Khara 469-831-2163** **Naresh Palkhiwala (R) 562-404-1729** **(O) 626-814-8425 ext.8725** **naresh.palkhiwala@westcov.org**	11 से 17 जून
3.	मियामी	**Mahendra Shah (R) 305-595-3833** **(O) 305-371-2149** **E-mail : bhitap@bellsouth.net**	18 से 24 जून
4.	शिकागो	**Niranjan Shah (R) 847-330-1088** **Bipin Bhayani (O) 815-939-3190** **(R) 815-939-0056 (F) 815-939-3159**	25 से 30 जून
5.	फिला–डेल्फिया (शिविर)	**Atul Khara 469-831-2163** **972-424-4902** **insty@verizon.net**	1 से 4 जुलाई
6.	सान् फ्रांसिस्को	**Ashok Sethi (R) 408-517-0975** **ashok_k_sethi@yahoo.com**	5 से 11 जुलाई
7.	डलास	**Atul Khara 469-831-2163** **972-424-4902** **insty@verizon.net**	12 से 16 जुलाई

पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री का विदेश कार्यक्रम

डॉ. भारिल्ल की तरह ही उनके शिष्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली भी कुछ वर्षों से नियमित धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं, उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है ह्न 9 जून से 12 जून – **ह्यूस्टन,** 13 जून से 18 जून – **डलास,** 19 जून से 25 जून – **सॉनफ्रांसिस्को**, 26 से 30 जून – **सॉनडियागो**, 1 से 4 जुलाई – **फिलाडेल्फिया (शिविर)**, 5 से 14 जुलाई – **मियामी**, 15 से 18 जुलाई – **न्यूयार्क,** 19 से 25 जुलाई – **शिकागो**।

समारोह की विशेषता यह थी कि दिगम्बर समाज ने तो बिना किसी पूर्वाग्रह के ...कता प्रदर्शित करते हुये कार्यक्रम को सफल

वास्तव में तत्त्व का प्रचार–प्रसार डॉ.भारिल्ल ही कर रहे हैं और आगे भी करने वाले यही हैं। –गुरुदेवश्री कानजी स्वामी

एक हुकमचंद ही सत्य का कथन करने वाला तैयार हो गया है।

– गुरुदेवश्री कानजी स्वामी

हीरक जयन्ती के अवसर पर ह्न

डॉ. भारिल्ल : मनीषियों की दृष्टि में

वर्तमान तत्त्व की प्रभावना में उसका (डॉ. भारिल्ल का) बड़ा हाथ है, स्वभाव का भी सरल है।...तत्त्व की बारीक से बारीक बात पकड़ लेता है, पण्डित हुकमचंद बहुत ही अच्छा है। **– गुरुदेवश्री कानजीस्वामी**

धर्मानुरागी डॉ.भारिल्ल ने समयपाहुड का जैसा गम्भीर चिंतन मनन किया है, उसे देखकर यदि उनका नाम समयसार भारिल्ल होता तो अधिक उपयुक्त होता। **– आचार्य विद्यानंदजी**

मेरा आत्मा, मेरा रोम–रोम आपके (डॉ.भारिल्ल के) साहित्य को पढकर गद्गद् हो उठता है। **ह्न आचार्य धर्मभूषणजी महाराज**

क्रमबद्धपर्याय पुस्तक वर्तमान में सारस्वत विद्वत् लोक में प्रज्वलित प्रकाशमान ध्रुवतारा है। **ह्न स्वस्तिश्री भुवनकीर्ति भट्टारकस्वामीजी**

आपके द्वारा लिखा गया साहित्य युगों–युगों तक जैन शासन को टिकाये रखने में स्तंभ का कार्य करेगा। इतिहास इसकी साक्षी देगा।

ह्न पण्डित नेमीचन्द पाटनी, आगरा

डॉ. साहब की लेखनी पर सरस्वती का वरदान है।

ह्न पण्डित जगनमोहनलाल शास्त्री, कटनी

भारिल्लजी आगम के आलोक में निर्विवाद रूप से युगों युगों तक श्रद्धा–विनय के साथ स्मृत किये जाते रहेंगे।

– प्रतिष्ठाचार्य विमलकुमार जैन – सम्पादक (वीतराग–वाणी)

डॉ. भारिल्ल ऐसे विशिष्ट व्यक्ति हैं, जो सिर्फ अपने मिशन में व्यस्त हैं और यश उनके पीछे भागता है। **ह्न डॉ. राजीव प्रचंडिया**

विषय की गंभीरता को बगैर कोई क्षति पहुँचाये, ज्ञान की गहराईयों में तत्क्षण डुबो देने की कला में माहिर, संपूर्ण भारत के इस श्रेष्ठ वक्ता की वक्तृत्व कला का घोर विरोधी भी नमन करते है।

– अशोक बड़जात्या, इन्दौर

डॉ. भारिल्ल के समन्वय के पाँच सूत्र

1. भूतकाल को भूल जाओ, इसकी चर्चा मत करो।
2. भविष्य के लिये शर्त

दि.जैन समाज की संसद के रूप में विख्यात दि.जैन महासमिति के महिला विंग के प्रतिष्ठापूर्ण चुनाव महासमिति मध्यांचल की युवा प्रकोष्ठ मंत्री श्रीमती आशाजी झांझरी के निर्देशन में सम्पन्न हुये। ज्ञात रहे कि प्रथम बार मुमुक्षु समाज की सक्रीय महिला को पद प्राप्त हुआ है।

अथाह सागर
गरजती तरंगे
देखकर
अनायास ही आपकी
मूरत उभरती
चिंतवन की गहराई
व गंभीरता के दर्शन देते।।

व्योम की विशालता में
आपकी तस्वीर दिखती
असीमित ज्ञान को
अपने में समेटे।।

अनवरत गतिमान
सरिता में
कर्णप्रिय गुंजायमान
धारा में
वही सूरत फिर उभरती
वाणी की मधुरता से
मन को मोहित करते।।

तीर के तीखेपन में
तूफान की तीव्रता में
वही अक्स
फिर उमड़ता
तर्क की तीक्ष्णता से
पाखण्ड का खण्डन करते
एक नया आयाम धरते।।

धरा होती
पल्लवित
तरुओं से आच्छादित
लेखन की सघनता से
नूतन ज्ञान के अंकुर बोते
पाठकों की चित्तधरा में
आप ही आप दिखाई देते।।

भारवि के तेज में
आपके
सर्वांगीण व्यक्तित्व के
प्रफुल्लित आदर्श जीवन के
दर्शन होते।।

हर अंश में प्रकृति के
गुण फैले हैं आपके
गुरुवर हैं
पूजनीय हैं
वंदनीय हैं
चरण आपके....

ह्र सुधीर जैन, अमरमऊ
शास्त्री तृतीय वर्ष

एक तो स्वयं जानते नहीं और जाननेवालों की सुनते नहीं

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, जयपुर

(नोट - ९ अप्रैल २००८ को प्रात: ६ बजकर २० मिनिट पर साधना चैनल पर डॉ. भारिल्ल के आनेवाले प्रवचनों में समयसार की चौथी गाथा और उसकी टीका पर हुये अत्यन्त उपयोगी प्रवचन का महत्त्वपूर्ण अंश जैनपथप्रदर्शक के पाठकों के लाभार्थ यहाँ दिया जा रहा है। ह्न प्रबंध संपादक)

आत्मानुभव से रहित अज्ञानी जगत की दुर्दशा का चित्र प्रस्तुत करते हुए आचार्य अमृतचन्द्रदेव समयसार की चौथी गाथा की टीका में कहते हैं कि यह लोक संसाररूपी चक्की के पाटों के बीच अनाज के दानों के समान पिस रहा है, मोहरूपी भूत इसे पशुओं के समान जोत रहा है, तृष्णारूपी रोग से यह जल रहा है, विषयभोग की मृगतृष्णा में फंसकर मृग की भांति भववन में भटक रहा है। आश्चर्य की बात तो यह है कि पंचेन्द्रिय विषयों में उलझा हुआ यह अज्ञानी लोक परस्पर आचार्यत्व भी करता है। अज्ञानी लोग विषय-कषाय की चतुराई एक-दूसरे को बताते हैं, सिखाते हैं। पैसा कैसे कमाना, उसे कैसे भोगना आदि बातें एक-दूसरे को बताते हैं; उन्हीं कार्यों को करने की प्रेरणा भी देते हैं।

यदि कदाचित् ऐसे लोग धर्म के क्षेत्र में भी आ जावे तो भी उनकी यह आदत छूटती नहीं है। यहाँ भी वे एक-दूसरे को सिखाते हैं कि चन्दा कैसे इकट्ठा करना और उसका अपनी रुचि के अनुकूल खर्च कैसे करना, कैसे भोगना; उसके दम पर अपना नेतृत्व कैसे कायम करना।

उक्त संदर्भ में मैंने सन् १९७७ ई. में त्याग धर्म की चर्चा करते समय लिखा था ह्न

''समाज में त्याग धर्म के सच्चे स्वरूप का प्रतिपादन करनेवाला विद्वान् बड़ा पण्डित नहीं; बल्कि वह पेशेवर पण्डित बड़ा पण्डित माना जाता है, जो अधिक से अधिक चन्दा करा सके। यह उस देश का, उस समाज का दुर्भाग्य ही समझो, जिस देश व समाज में पण्डित और साधुओं के बड़प्पन का नाप ज्ञान और संयम से न होकर दान के नाम पर पैसा इकट्ठा करने की क्षमता के आधार पर होता है।

इस वृत्ति के कारण समाज और धर्म का सबसे बड़ा नुकसान यह हुआ कि पण्डितों और साधुओं का ध्यान ज्ञान और संयम से हटकर चन्दे पर केन्द्रित हो गया है। जहाँ देखो, धर्म के नाम पर, विशेषकर त्यागधर्म के नाम पर, दान के नाम पर, चन्दा इकट्ठा करने में ही इनकी शक्ति खर्च हो रही है, ज्ञान और ध्यान एक ओर रह गये हैं।

यही कारण है कि उत्तम त्यागधर्म के दिन हम त्याग की चर्चा न करके दान के गीत गाने लगते हैं। दान के भी कहाँ, दानियों के गीत गाने लगते हैं। दानियों के गीत भी कहाँ, एक प्रकार से दानियों के नाम पर यश के लोभियों के गीत ही नहीं गाते; चापलूसी तक करने लगते हैं।

यह सब बड़ा अटपटा लगता है, पर क्या किया जा सकता है ह्नसिवाय इसके कि इससे हम स्वयं बचें और त्यागधर्म का सही स्वरूप स्पष्ट करें; जिनका सद्भाग्य होगा वे समझेंगे, बाकी का जो होना होगा सो होगा।[१]''

१. धर्म के दशलक्षण, पृष्ठ १२८

त्यागधर्म संबंधी इस प्रकरण की चर्चा स्वामीजी भी भरपूर किया करते थे। वे धर्म के दशलक्षण पुस्तक का उक्त अंश लोगों को बताकर कहते थे कि देखो कैसा सटीक लिखा है।

हाँ, तो अपनी बात यह चल रही थी कि ये लोग धर्म क्षेत्र में आकर भी, धर्म के नाम पर सम्पूर्ण जीवन समर्पित करके भी, आत्मकल्याण की भावना से घर-बार छोड़कर भी, ब्रह्मचर्यादि व्रतों, अणुव्रतों-महाव्रतों को धारण करके भी अपनी पुरानी आदत नहीं छोड़ पाते और अपने को धर्म के नाम पर लौकिक कार्यों में ही उलझाये रखते हैं।

संस्थायें खड़ी करना, नये-नये संस्थानों को खड़ा करना; उनके नाम पर चन्दा इकट्ठा करना, तीर्थों के झगड़ों में उलझना, उनके नाम पर ऐसे काम करना; जो किसी भी रूप में ठीक नहीं माने जा सकते। क्या आप नहीं जानते हैं कि आज कल क्या-क्या नहीं होता है, अदालतों में।

गंभीरता से विचार करने की बात तो यह है कि जिन्होंने आत्मकल्याण की भावना से शादी नहीं की, घर का धंधा-पानी भी छोड़ा, घर छोड़ा; उन्हें तो इसप्रकार के कामों में नहीं उलझना चाहिए। वे तो अपना रहने का स्थान और करने का काम, आध्यात्मिक लाभ की दृष्टि से चुन सकते हैं; क्योंकि वे अपने स्थान और कार्य के चुनाव में पूरी तरह आजाद हैं।

जिन गृहस्थ आत्मार्थी भाइयों को, विद्वानों को अपनी आजीविका स्वयं करनी है; वे तो स्थान और काम चुनने के लिए आजाद नहीं हैं; क्योंकि उन्हें तो जहाँ आजीविका का साधन मिलेगा अर्थात् नौकरी मिलेगी, व्यापार चलेगा; वहाँ रहना होगा। इसीप्रकार काम चुनने में भी वे आजाद नहीं हैं; अपनी-अपनी योग्यतानुसार जहाँ जो काम मिलेगा; वही काम करना होगा। अत: उनके रहने का स्थान और करने का काम उनकी रुचि का द्योतक नहीं है; पर सांसारिक काम छोड़कर आत्मकल्याण करने की भावना वाले गृहत्यागियों का रहने का स्थान और करने का काम उनकी आंतरिक रुचि का द्योतक अवश्य हैं।

उन्हें क्या जरूरत है ऐसे भीड़बाड़ वाले स्थानों पर रहने की, जहाँ न तो आध्यात्मिक वातावरण ही है और न संयम की साधना के योग्य अवसर। जहाँ न्याय-अन्याय पूर्वक भोग-सामग्री जोड़ने और सारी मर्यादायें तोड़कर उन्हें भोगने का ही वातावरण है; ऐसे मुम्बई, कलकत्ता, दिल्ली आदि जैसे स्थानों का चुनाव उनकी किस वृत्ति का परिणाम हो सकता है; इसके बारे में मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

मेरी दृष्टि में तो उन्हें रहने के लिए ऐसा शान्त-एकान्त स्थान चुनना चाहिए कि जहाँ उन्हें कुछ सीखने को मिले और यदि वे स्वयं सक्षम विद्वान हैं तो उन्हें कुछ सीखने की भावना रखनेवाले आत्मरुचिवंत श्रोता

मिलें। न तो जहाँ समझानेवाले हों और न समझनेवाले ही, तत्त्वचर्चा करने के लिए बराबरी के आत्मार्थी भी न हों, उनका वहाँ रहना कहाँ तक उचित है ? क्या यह गंभीरता से विचार करने की बात नहीं है ?

प्रवचनसार मैं तो अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि या तो गुणाधिक की संगति में रहना चाहिए या फिर समान गुणवालों की संगति में रहना उचित है। यदि हम उनकी संगति में रहेंगे कि जो निरन्तर आध्यात्मिक शास्त्रों के अध्ययन-मनन में रहते हैं; तो हमें अध्यात्म क्षेत्र में कुछ न कुछ मिलेगा ही; वे बातें भी समझने के लिए मिल सकती हैं कि जिन्हें हम सतत् स्वाध्याय करके भी नहीं समझ सकते। प्रत्येक व्यक्ति को विशिष्ट विद्वानों का सत्समागम सहज संभव नहीं है; अत: उन लोगों को बराबर का अभ्यास करनेवालों की संगति में रहना उचित है।

पंडित टोडरमलजी मोक्षमार्गप्रकाशक में लिखते हैं कि प्रथम तो गहराई से आध्यात्मिक शास्त्रों का स्वयं स्वाध्याय करें। पर जब प्रयत्न करने पर भी जो बात समझ में न आये तो अधिक अभ्यासी गुरुजनों से पूछे, वे न मिले तों साधर्मियों से तत्त्वचर्चा करे; उनसे जो सुनने को मिले उस पर गंभीरता से चिन्तन करे और यह तबतक करता रहे कि जबतक वस्तुस्वरूप पूरी तरह स्पष्ट न हो जाये। इसके अतिरिक्त और जो कुछ भी धर्म के नाम पर किया जाता है, उससे आत्मकल्याण होनेवाला नहीं है।

धर्म के नाम पर, तीर्थक्षेत्र के नाम पर ऐसे वियावान जंगल में जावेंगे कि जहाँ न कोई धर्म की बात सुनने वाला है और न सुनानेवाला; चर्चा करनेवाला भी कोई नहीं। बस मजदूरों को डांटते-फटकारते रहो और चन्दा मांग-मांग कर महल चिनवाते रहो या फिर अदालतों के चक्कर काटते रहो या फिर हजारों बार बोली गई स्तुतियों और पूजनों पर नाच-नाच कर गाते रहो, गवाते रहो, नचाते रहो। आत्मकल्याण के मार्ग में क्या होनेवाला है इन सबसे।

अरे भाई ! स्थान के साथ-साथ काम के बारे में भी गंभीरता से चुनाव करने की बात है। वे लोग अपने को आध्यात्मिक शास्त्रों को पढ़ने-पढ़ाने के, सुनने-सुनाने के, लिखने-लिखाने के, छपाकर घर-घर पहुँचाने के ज्ञानयज्ञ में क्यों नहीं जोड़ते; जिससे स्व-पर का आत्मकल्याण हो ?

आचार्य अमृतचन्द्र आगे लिखते हैं कि एकत्व-विभक्त आत्मा के बारे में न तो स्वयं कुछ जानता है और न जाननेवाले की सेवा करता, न उनका समागम करता है, उनसे सीखने-समझने की कोशिश भी नहीं करता, यदि आगे होकर भी वे कुछ सुनाये-समझायें तो उनकी बात पर ध्यान ही नहीं देता; इसलिए अनादिकाल से संसार में भटक रहा है।

आचार्य कहते हैं कि जाननेवालों की सेवा नहीं करता। सेवा करने का आशय मात्र उनके पैर दबाना नहीं है, उनके लिए लौकिक अनुकूलतायें जुटाना नहीं है; अपितु उनके प्रतिपादन से लाभ उठाना है। वे आत्मा-परमात्मा के संदर्भ में जो कुछ भी समझाते हैं; उसे गहराई से समझने और श्रद्धापूर्वक स्वीकार करने से है। वे जो कुछ लिखते हैं, उसे पढकर; उसके भाव को आत्मसात करने से है।

अरे भाई ! इसके बिना देशनालब्धि संभव नहीं है।

आचार्य अमृतचन्द्र के जमाने में ऐसी स्थिति रही होगी, तभी तो उन्हें यह सब लिखना पड़ा, आज की स्थिति तो इससे अधिक विकट है। आज के जमाने में तो लोग जिनवाणी को न सुनने देते हैं, न सुनाने देते हैं; न पढ़ने देते हैं, न पढ़ाने देते हैं, न लिखने देते हैं; न छपाने देते हैं और न अपने घर में रखते हैं और न घर-घर पहुंचाने देते हैं।

वर्णीजी कहा करते थे कि पुरुषों में ७२ कलायें होती हैं; पर बुन्देलखण्ड के लोगों में २ कलायें अधिक होती हैं। एक तो वे कुछ जानते नहीं हैं और दूसरे जाननेवालों की मानते नहीं हैं। पर मेरा कहना यह है कि यह बात अकेले बुन्देलखण्ड के लिए ही नहीं है; अपितु सम्पूर्ण जगत की यही स्थिति है।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव भी तो यही कह रहे हैं कि यह अज्ञानी जगत प्रथम तो जैन तत्त्वज्ञान की मूल बात अर्थात् आत्मा की बात जानता नहीं है और जाननेवालों की उपासना नहीं करता, उनकी सेवा नहीं करता, उसके सत्समागम में नहीं रहता, उनसे लाभ नहीं उठाता; अपितु उनका विरोध करता है; क्योंकि उसे लगता है कि इनके होने से हम प्रतिष्ठित नहीं हो पाते। अरे भाई ! यदि आत्मकल्याण करना है तो आध्यात्मिक शास्त्रों का गंभीर अध्ययन करो, उनका अध्ययन-अध्यापन करनेवालों की संगति में रहो, आध्यात्मिक शास्त्रों के प्रचार-प्रसार में सहयोग करो। आत्मकल्याण के मार्ग में एकमात्र करने-कराने योग्य तो यही सबकुछ है। इसकी उपेक्षा या विरोध करना तो अनंत संसार का कारण है।

हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि हमारे इस प्रतिपादन से उन लोगों को कोई लाभ होनेवाला नहीं है, जो इस मार्ग पर बहुत आगे बढ़ चुके हैं, पर जो लोग इस मार्ग पर चलने के लिए मन बना रहे हैं, उन्हें तो लाभ होगा ही।

यदि उनमें से भी किसी की कषाय कुछ मन्द हो जाय या मंद हो गई हो तो वे लोग भी इसका लाभ उठा सकते हैं; पर बात यह है कि सामाजिक कार्यों से जो कुछ थोड़ी-बहुत प्रतिष्ठा उन्हें प्राप्त हो जाती है, उससे उनकी सबसे बड़ी हानि तो यही होती है कि वर्तमान में जिन लोगों से उन्हें अध्यात्म के क्षेत्र में कुछ सीखने-समझने को मिल सकता है; वे उनकी बात न तो श्रद्धापूर्वक ध्यान से सुन ही सकते हैं और न पढ़ सकते हैं।

जो भी हो, वस्तुस्थिति का सत्यज्ञान तो समाज को होना ही चाहिए। यह तो सुनिश्चित ही है कि हमारे इस प्रतिपादन से कभी न कभी, किसी न किसी को, कुछ न कुछ लाभ तो होगा ही; क्योंकि यह लोक बहुत बढ़ा है और काल अनन्त है। हमारा तो यह पक्का विश्वास है कि यहाँ नहीं तो और कहीं तथा अभी नहीं तो कभी न कभी, किसी न किसी को इस प्रतिपादन का लाभ अवश्य होगा। यदि किसी को लाभ होना ही नहीं होता तो हमें इस तथ्य को स्पष्ट करने का भाव (विकल्प) भी नहीं आता; क्योंकि सत्य का प्रतिपादन निरर्थक नहीं होता।

पण्डित टोडरमलजी का लाभ उस समय के लोगों ने लिया हो, चाहे न लिया हो; पर आज हम तो उनके प्रतिपादन का भरपूर लाभ उठा ही रहे हैं। इसीप्रकार आज कोई लाभ उठाये चाहे न उठाये, पर भविष्य में तो कोई न कोई लाभ उठायेगा ही।

श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, कोटा द्वारा

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की हीरक जयंती
के अवसर पर सादर समर्पित

भगवान महावीरस्वामी से आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य अमृतचंद्रदेव आदि वीतरागी दिगम्बर संतों एवं पण्डित बनारसीदासजी, पण्डित टोडरमलजी, दौलतरामजी, आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी आदि विद्वानों द्वारा प्रचारित वीतरागी तत्त्वज्ञान को आत्मसात् कर देश-विदेश में जन-जन तक पहुँचाने वाले एवं **जैन विद्वानों की परम्परा को पुनर्जीवित कर सैंकड़ों विद्वानों के निर्माता** विश्व-प्रसिद्ध विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल को श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, कोटा

'विद्वत् निर्माता'

की उपाधि से विभूषित कर अत्यन्त गौरव का अनुभव कर रहा है।

प्रेमचंद जैन बजाज
अध्यक्ष

सोमवार
दिनांक १ मार्च, २०१०

पण्डित रतन चौधरी
निर्देशक